Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

भारत और वैश्विक दक्षिण

प्रो. मैना निर्वाण राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान).

ABSTRACT:

द्वितीय विश्व के बाद बनी विश्व व्यवस्था में मोटे तौर पर विश्व दो भागों में ही बंटा रहा है। सोवियत रूस के विघटन से पहले विचारधारा के आधार पर - साम्यवाद और पूंजीवाद में और बाद में विकास के आधार पर विकसित और विकासशील देशों में। आज के तकनीकी परिमार्जन में इसे उत्तर और दक्षिण कहा जाने लगा है। इसी उत्तर दक्षिण के विभाजन में दक्षिण के देशों को सामूहिक रूप से वैश्विक दक्षिण, दुसरे शब्दों में मोटे तौर पर तीसरी दुनियाँ के देश कहा जाता है। वैश्विक दक्षिण किसी भौगोलिक जुड़ाव का परिचायक नही है। वर्न ये कम विकसित, गरीबी और कम आय वाले उन राष्ट्रों का परिचायक है जो कभी न कभी विकसित राष्ट्रों के उपनिवेश रहें है।

भारत का संबन्ध तीसरी दुनिया के इन देशों के साथ आजादी के पहले से ही रहा है। उस समय भी भारत ने इनका नेतृत्व करते हुए इनकी आवाज को एक मंच प्रदान किया था और आज भी भारत इनका नेतृत्व करने की क्षमता रखता है। जिसका परिचय उसने जी 20 देशों की मेजबानी करते हुए दिया और वैश्विक दक्षिण की चिंताओ को पूरजोर तरीके से दुनियाँ के सामनं रखा।

इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया जायेगा कि वैश्विक दक्षिण से क्या तात्पर्य है, इसके मुद्दे व मांगे क्या है, कैसे भारत वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है तथा वो कौनसे कारण है जिनके माध्यम से भारत इस क्षेत्र में अपने प्रतिद्वंदी चीन से बढ़त हासिल कर सकता है।

KEYWORDS:

ग्लोबल दक्षिण , वैश्विक दक्षिण, वैश्विक उत्तर, भू राजनीति, जी 20, विकसित व विकासशील, विश्व व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था ।

प्रस्तावना

आर्थिक विकास की दृष्टि से दुनियाँ दो हिस्सों - उत्तर व दक्षिण में बँटी हुई है। उत्तर में विकसित राष्ट्र आते है और दक्षिण में विकासशील, गरीब व कमजोर राष्ट्र शामिल है। दोनों खेमों के अपने मुद्दे, माँगे व धारणाएँ है जिनमें अक्सर टक्कराव देखने को मिलते है। इन मुद्दों को लेकर विश्व मंचों पर दोनो खेमें अक्सर आमने-सामने खड़े होते है। विकसित राष्ट्र अपनी हटधर्मिता के कारण विकासशील राष्ट्रों की मांगों को नकारते आ रहे है। अतः तीसरी दुनियाँ के राष्ट्र विकसित राष्ट्रों से अपनी बात मनवाने के लिए रणनीतिक तैयारी के साथ संगठित हो कर पूरजोर अपनी बात रखने को प्रयासरत है।

वैश्विक दक्षिण को मौटे तौर पर तीसरी दुनियँ के नाम से भी जाना जाता है। किन्तु इसे तीसरी दुनिया कहना पूरी तरह सही नही है। 20वीं सदी तक ये तीसरी दुनियाँ ही थी, किन्तु आज 21वीं सदी में इसके कई राष्ट्र तीव्रगति से विकास कर रहे है। चीन व भारत जो ग्लोबल साउथ के देश है लेकिन ये विश्व अर्थ व्यवस्था में क्रमशः दुसरे व पाँचवे स्थान पर है। इसका तात्पर्य है कि ग्लोबल साउथ के सभी राष्ट्र अब उतने गरीब व कमजोर नहीं है। इसके कई राष्ट्र अब वैश्विक उत्तर के देशों के साथ समानता के स्तर पर संवाद करने की स्थिति मे है। विश्व राजनीति में उनका प्रभाव इतना है कि विकसित राष्ट्र भी अब उनकी पूरी तरह अवहेलना नहीं कर सकते है। तीसरी दुनियाँ के देश विकसित राष्ट्रों के लिए मात्र कच्चे माल की मंडियाँ थी किन्तु वैश्विक दक्षिण के अनेक राष्ट्र अपने उत्पादन को विश्वभर में, यहाँ तक कि विकसित देशों को भी निर्यात कर रहे है। ये गुणात्मक अन्तर वैश्विक दक्षिण को तीसरी दुनियाँ से अलग करता है।

ग्लोबल साउथ का तात्पर्य

ग्लोबल साउथ के अधिकांश विश्लेषणों से ज्ञात होता है कि इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1960 के दशक के अंत में राजनीतिक कार्यकर्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा वियतनाम युद्ध का वर्णन करते हुए किया गया था। तत्पश्चात जर्मन चांसलर विली ब्रांट द्वारा विश्व मानचित्र पर खिंची गई 'ब्रांट लाइन' द्वारा धनी, विकसित व औद्योगिक उत्तर को दक्षिण से अलग करने का प्रयास किया गया।[1] ग्लोबल साउथ की कोई निश्चित परिभाषा व भौगोलिक सीमा तय नहीं की जा सकती है। इसमें अलग अलग इतिहास, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, विचारधारा, जलवायु तथा हितों वालें देश शामिल है। भौगोलिक दृष्टि से यह शब्द भूमध्य रेखा के नीचे (दक्षिण गोलार्ध) के देशों के संदर्भ मे प्रयुक्त किया जाता है, लेकिन इसके अधिकांश देश भूमध्य रेखा के ऊपर उत्तर में स्थित है। वैश्विक आबादी का अधिकांश हिस्सा भूमध्य रेखा के ऊपर ही निवास करता है। जैसे भारत और चीन, जो सर्वाधिक आबादी वाले देश है। इस अर्थ में ये शब्द दुनियाँ के भौगोलिक विभाजन से ज्यादा एक राजनीतिक नारा है।[2] जो इन देशों के साझा हितों की प्राप्ति की रणनीतिक साझेदारी का प्रतीक है।

ग्लोबल साउथ का तात्पर्य दुनियाँ के उन देशों से है जिन्हे विकासशील, कम विकसित या अविकसित भी कहा जाता है। जिनमें से अधिकांश गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का हिस्सा भी रहे है। एक समय जिन्हे तीसरी दुनियाँ भी कहा जाता था। सामान्यतः तौर पर ये ' ग्लोबल नॉर्थ ' के देशों की तुलना में अधिक गरीब है, इनमें आय असमानता का स्तर अधिक है और ये कम जीवन प्रत्याशा और कठिन जीवन स्थितियों से पीड़ित है-अर्थात अमीर देश जो ज्यादात्तर उत्तरी अमेरिका और यूरोप में स्थित है, जिनमे ओशिनिया और अन्य जगहों पर कुछ वृद्धि हुई है।[3] किन्तु आज इस समूह के सभी देश उतने गरीब व अविकसित नहीं है वर्न इनमें से कई देश तीव्र गति से विकास कर रहे है और बड़ी व उभरती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी पहचान बना चुके है। एक अनुमान के अनुसार 2030 तक चार सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से तीन गलोबल साउथ से होंगी- जिसमें भारत, चीन व इंडोनेशिया शामिल है।

ग्लोबल साउथ को जोड़ने वाला तत्व इनका भू राजनीतिक व आर्थिक स्तर, विकास की तीव्र इच्छा तथा समान हित व मुद्दे है। इसकी जड़े जी 77 में देखी जा सकती है। जी 77 विकासशील देशों का समूह है, जिसकी स्थापना 1960 के दशक में संयुक्त राष्ट्र में इन देशों के द्वारा अपने सामूहिक हितों को व्यक्त करने और बढ़ावा देने के लिए की गई थी। जी 77 मे अब 135 देश शामिल है। इस समूह में एशिया, अफ्रिका, कैरेबियान, दक्षिण अमेरिका और ओशिनिया के देश सम्मिलित है। वर्तमान में इन देशों को, जनवरी 2023 में भारत में आयोजित प्रथम वर्चुअल वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले 125 देशों के रूप में पहचाना जा सकता है।[4]

ग्लोबल साउथ के समक्ष चुनौतियाँ

आज सम्पूर्ण विश्व के सामने अनेक चुनौतियाँ है। विश्व में बढ़ते राजनीतिक व सामाजिक संघर्ष, बदलते भू राजनीतिक समीकरण, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न संकट पैदा हो गये है, जिनका सबसे ज्यादा नकारात्मक प्रभाव दक्षिण के देशों पर पड़ता है। वैश्विक उत्तर के भू राजनीतिक संघर्ष वैश्विक दक्षिण को प्रभावित करते है। जैसे कि रूस-यूक्रेन संघर्ष के कारण खाद्य और तेल की कीमतों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। यूक्रेन में युद्ध, बिगड़ी भू राजनीति और सामरिक प्रतिस्पद्र्धा के बढ़ने से नीति संचालन विखंडन का

खतरा बढ़ गया है, जिससे वैश्विक सहयोग और आर्थिक स्थिरता प्रभावित हो रही है। सूखा, आग,और बाढ़, महामारी के बादकमजोर आर्थिक विकास और उच्च मुद्रास्फीति वैश्विक दक्षिण के कमजोर देशों के लिए और भी बड़ी चुनौतियाँ पैदा कर रही है।[5]

दक्षिण के देशों के सामने आज निम्न प्रमुख चुनौतियाँ है-

1. वैश्विक मंचों पर कम प्रतिनिधित्व - जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से अफ्रीका और लैटिन अमेरिका को बाहर रखना।

2. उच्च सार्वजनिक ऋण - जैसे यूएनसीटीएडी की 'ए वल्ड ऑफ डेट रिपोर्ट 2024 के अनुसार, विकासशील देशों में सार्वजनिक ऋण विकसित देशों की तुलना में दोगुनी दर से बढ़ रहा है।

3. अलोकतांत्रिक वैश्विक शासन और वित्तीय संस्थाएँ - जैसे WTO की ढीली अपीलीय विवाद निपटान प्रणाली, विश्व बैंक और IMF जैसी ब्रेटेन वुड्स संस्थाओं में कम प्रतिनिधित्व।

4. वर्तमान वैश्विक वित्तीय संरचना गलोबल साउथ की विकास क्षमता का समर्थन करने के लिए अनुपयुक्त है क्योंकि यह प्रणाली उभरते बाजारों को बड़े पैमाने पर और समयानुकूल वित्तीपोषण नही कर रहीं है।

5. जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुपातहीन संवेदनशीलता - WMO की 'दक्षिण -पश्चिम प्रशांत क्षेत्र में जलवायु की स्थिति 2023 रिपोर्ट' के अनुसार, वैश्विक उत्सर्जन में केवल 0.02% की हिस्सेदारी के बावजूद प्रशांत द्वीप समूह बढ़ते समुद्र स्तर के कारण उच्च जोखिम में है।

6. वैश्विक उत्तर से विचलन - जैसे लोकतंत्र, मानवाधिकार और जलवायु शासन के एजेंडे आदि की व्याख्या पर आम सहमति का अभाव।

7. वैश्विकरण व सामाजिक सुरक्षा तंत्र - जैसे-जैसे वैश्विकरण का विस्तार होता गया वैसे-वैसे ग्लोबल दक्षिण के देशों में सामाजिक सुरक्षा तंत्र आजीविका के विस्थापन के साथ सामंजस्य नही बना पाए। जिससे सामाजिक सामंजस्य और बहुपक्षीय प्रणाली के लिए समर्थन प्रभावित हुआ।

8. ग्लोबल साउथ में COVID-19 ने बाजार, व्यापार, आपूर्ति शृंखला और वित्तीय वैश्विकरण को बाधित किया, जिससे वैश्विक विकास प्रभावित हुआ।

9. ग्लोबल साउथ के देशों की पहुंच महत्वपूर्ण रूप से विकास के लिए आवश्यक संसाधनों तक नही है जिससे वे विकास की दौड़ में उत्तर के देशों से प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ है।

10. ग्लोबल साउथ के कई देशों में व्याप्त राजनीतिक अस्थिरता इसकी दीर्घकालिक विकास योजनाओं की क्रियान्वयन को कठिन बना सकती है और विदेशी निवेश के लिए प्रतिकूल वातावरण का भी निर्माण कर सकती है।

11. इसके अलावा इन देशों में आपस में भी वैचारिक, सामरिक व व्यक्तिगत मतभेद है, जो इसकी एकता व सामंजस्य के लिए चुनौति है और इसके कार्यो व लक्ष्यों को प्रभावित करतें है।

विश्व की प्रचलित सहभागिता प्रणाली मे असंतुलन के कारण, वैश्विक दक्षिण का एक बड़ा हिस्सा चिंताजनक रूप से अनुपातिक ऋणग्रस्तता में फंस गया है। यूएनसीटीएडी के आंकड़ो के अनुसार 2023 में विकासशील देशों का सार्वजनिक ऋण 29 ट्रिलियन डॉलर था। विकासशील देशों का सार्वजनिक शुद्ध ब्याज भुगतान 847 बिलियन डॉलर था। 54 विकासशील देश अपने राजस्व का 10% से अधिक शुद्ध ब्याज भुगतान पर खर्च करते है। विकासशील देशों ने 2022 में नकारात्मक शुद्ध संसाधन हस्तांतरण का अनुभव किया। विश्व बैंक के नवीनतम पूर्वानुमान संकेत देते है कि ग्लोबल साउथ की वृद्धि दर लगभग 3% पर स्थिर रहेगी, जो दशकों मे सबसे कम है।

ग्लोबल साउथ की मांगें व साझा हित

1980 में आई ब्रांट रिर्पोट में ब्रांट रेखा के आधार पर दुनियाँ को वैश्विक दक्षिण' व 'वैश्विक उत्तर' में बांटते हुए दक्षिण के तेज विकास के लिए वित्त और आर्थिक संसाधनों को पुनः आवंटित करने के लिए उत्तर व दक्षिण के बीच पुनर्जीवित और कुशल सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।[6] ग्लोबल साउथ के देश विद्यमान भेदभाव पूर्ण विश्व व्यवस्था का विरोध करते आए है। लोपेज पोर्टिलो जैसे वैश्विक दक्षिण नेताओं ने 1970 के दशक में नई विश्व आर्थिक व्यवस्था (NIEO) की मांग के लिए राजनीतिक व बौद्धिक वातावरण तैयार किया। 1973 में गुटनिरपेक्ष देशों के अल्जीर्यस सम्मेलन में सर्वप्रथम नई विश्व अर्थ व्यवस्था की मांग उठायी गयी। अल्जीरिया के राष्ट्रपति होरी बूमेदीन की मांग पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 9 अप्रैल से 1 मई 1974 तक आयोजित विशेष अधिवेशन में नई विश्व अर्थ व्यवस्था का घोषणा पत्र पारित हुआ, जो आज तक पूरी तरह लागू नहीं हो पाया है। वैश्विक दक्षिण के देश इस नई विश्व अर्थ व्यवस्था को लागू करवाने के लिए प्रयासरत है। इसके लिए आवश्यक है कि ये निरन्तर मिलकर प्रयास करें।

ग्लोबल साउथ के देशों के विकास की समस्या बहु आयामी है। एक ओर तीव्र औद्योगिकरण, वैज्ञानिक खेती, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को उन्नत बनाने तथा रोजगार की संभावनाओं और सकल राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि की समस्या इनके सामने है तो दूसरी तरफ आर्थिक स्वतंत्रता तथा स्वावलम्बन की समस्या है। जो इनकी राजनीतिक स्वतंत्रता से घनिष्ट रूप से जुड़ी है। इन देशों की तीसरी समस्या है, अन्तरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक ढांचा तथा उस पर विकसित देशों का नियन्त्रण। दुनियाँ में वित्तीय सहायता व तकनीक की देखभाल करने वाले संगठनों में विकसित देशों का वर्चस्व है। अतः वैश्विक दक्षिण के देशों की आवाज को तुलनात्मक रूप से उतना महत्व नही मिलता जितना अपेक्षित है। यही वजह की वैश्विक दक्षिण के देशों में विश्व जनसंख्या का 73.6% हिस्सा निवास करता है किन्तु विश्व उत्पादन में इनकी भागीदारी मात्र 21.5% है, जबकि वैश्विक उत्तर के देशों में विश्व की 26.4%जनसंख्या निवास करती है किन्तु विश्व उत्पादन में इनकी भागीदारी 78.5% है। ग्लोबल साउथ के देश अपनी निम्न मांगों के लिए प्रयासरत है-

1. **वैश्विक स्तर पर आनुपातिक मतः-** वैश्विक दक्षिण का कहना है, चूंकि दक्षिण के देशों में विश्व आबादी का तीन चैथाई हिस्सा निवास करता है जो विश्व के भविष्य को आयाम देने में अधिक व महत्त्व पूर्ण भागीदारी रखता है अतः विश्व की निर्णय प्रक्रिया में उनका सार्थक व आनुपातिक मत होना चाहिए।

2. **न्याय संगत प्रतिनिधित्वः-** वैश्विक शासन का वर्तमान मॉडल विश्व की जनसांख्यिकीय और आर्थिक वास्तविकताओं को पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित नही करता है तथा यह सुनिश्चित करने के लिए बदलाव की मांग करता है कि ग्लोबल साउथ के विचार सुने और माने जाएँ। अतः ग्लोबल साउथ वैश्विक शासन में न्यायसंगत प्रतिनिधित्व की मांग करता है।

3. **बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधारः-** ग्लोबल साउथ के देशों की मांग है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का विस्तार किया जाए। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से लेकर आज तक इसकी सदस्य संख्या व विश्व व्यवस्था में बहुत अन्तर आ गया है, अतः सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का भी समयानुकूल विस्तार किया जाये। गलोबल साउथ के प्रभूत्व वाले ब्रिक्स देशों की क्रय शक्ति तथा संयुक्त सकल घरेलू उत्पादन आज जी-7 देशों से आगे निकल गया है अतः विश्व बैंक व IFM जैसी संस्थाओं में भी आनुपातिक प्रतिनिधित्व की मांग करते है।

4. **लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर वैकल्पिक तंत्रः-** वैश्विक दक्षिण के देशों की मांग है कि लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर पंचशील, गुजराल सिद्धान्त और गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सिद्धान्त पर आधारित वैकल्पिक तंत्र बनाए जाए।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने कहा कि ''नई वास्तविकताएं वैश्विक शासन की संस्थाओं में मूलभूत सुधार की मांग करती है ताकि वे अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बन सके और मानवता के सामने आने वाली चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना कर सके।'' आज वैश्विक दक्षिण के देश आर्थिक विकास में अपना हिस्सा लेने और वैश्विक शासन में अग्रणी भूमिका निभाने की इच्छा की अभिव्यक्ति विभिन्न वैश्विक मंचों से कर रहें है। इनका मानना है कि अब राजनीतिक दृष्टि से पश्चिम देशों को, विशेष रूप से यूरोपीय संघ को वैश्विक दक्षिण के साथ सहयोग और विकास के लिए अपने मॉडल का पुनर्मूल्याकंन करना होगा। वर्तमान विश्व व्यवस्था में अतंरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी बहुपक्षीय संस्थाएं, पारंपरिक रूप से पश्चिमी देशों के प्रति अनुचित रूप पक्षपातपूर्ण है।

आज वैश्विकृत दुनिसाँ में, दक्षिण दक्षिण सहयोग (ग्लोबल साउथ) एक ऐसी विश्व अर्थव्यवस्था और वैश्विक शासन का निर्माण करने की कुंजी है जो सभी के लिए काम करे। दक्षिण दक्षिण सहयोग जो एकजुटता के माध्यम से समाधान प्रस्तुत करता है, विकासशील देशों को सामूहिक आत्म लचीलापन निर्मित करने तथा अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत आर्थिक को बढ़ावा देने में सहायता करने के लिए महत्वपूर्ण है।[7]

ग्लोबल साउथ व भारत

ग्लोबल साउथ कोई औपचारिक गुट नहीं है, कोई व्यापक समझौता या कोई संगठन नहीं है। लेकिन कुछ देश दूसरों की तुलना में अधिक प्रमुख भूमिका निभा रहें है।.....भारत ग्लोबल साउथ के अग्रणी समर्थकों में से है। भारत के प्रधानमंत्री ने 2023 में दो व अगस्त 2024 मे तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलनों की शुरूआत और उनकी मेजबानी की। जिसमें सौ से ज्यादा देश ''एक साझा मंच पर अपने दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं को साझा करने के लिए एक साथ आए।[8]

भारत ने तीनों वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलनों की मेजबानी क्रमशः 12-13 जनवरी 2023, 17 नव. 2023 तथा 17 अगस्त 2024 (वर्चुअल प्रारूप में) की। वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन भारत के वसुधैव कुटुम्कम, या एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के दर्शन का अन्तरराष्ट्रीय विस्तार है। तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन का विषय, एक सतत भविष्य के लिए सशक्त वैश्विक दक्षिण रहा। इस शिखर सम्मेलन का जोर ग्लोबल साउथ या विकासशील देशों के सामने आने वाली चुनौतियों से एकजुट होकर निपटने पर रहा। भारत यहाँ अपने बढ़ते वैश्विक प्रभाव, संस्कृति, मूल्यों तथा कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से ग्लोबल दक्षिण को संगठित करने तथा इसकी आवाज बनने में महत्ती भूमिका निभा सकता है।

भारत के वर्तमान भू राजनीतिक समीकरण में यह समय ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने के लिए पूर्णतः अनुकूल है। वैश्विक थिंक आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ) स्ट्रैटेजिक स्टडीज प्रोग्राम के साथ यूरोप के एसोसिएट फेलो शायरी मल्होत्रा ने लिखा कि ग्लोबल नॉर्थ के देशों के साथ इसकी समान चुनौतियाँ इसे एक अद्वितीय स्थिति में रखती है। भारतीय विदेश मंत्रालय के पूर्व सलाहकार अशोक मलिक ने डॉयचे वेले (डीडब्ल्यू) को बताया कि भारत का ''रणनीतिक लक्ष्यों और मूल्यों के मामले में पश्चिम के साथ गहरा संबंध है। इसलिए भारत ने विकसित दुनियाँ के जी 20 सदस्यों और ग्लोबल साउथ के बीच एक सेतु बनने की कोशिश की है।[9] भारत दुनियाँ के सबसे बड़े व सफल लोकतंत्र के रूप में पहचान बना चुका हैं। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है, जिसके पास सस्ता व कुशल कार्यबल है और तीव्रगति से विकास पथ पर अग्रसर है।

कोविड के समय भारत ने स्पष्ट कर दिया कि भारत दुनियाँ के देशों की सहायता बिना शर्त गैर निर्देशात्मक रूप से मानवीय आधार पर करता है। जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में भारत की शाख व विश्वसनीयता बढ़ी है। यही वजह है कि पापुआ न्यू गिनी के प्रधानमंत्री जेम्स मारापे ने मई 2023 में भारत -प्रशांत द्वीप समूह सहयोग फोरम में अपने संबोधन में भारतीय प्रधानमंत्री से वैश्विक उत्तर के सामने तीसरी आवाज पेश करने का आह्वान किया। ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में मोदी की सरहाना करते हुए मारापे ने सुझाव दिया कि प्रशांत द्वीप के देश वैंश्विक मंचों पर उनकी आवाज के पीछे एकजुट होंगे।[10] मारापे का यह कथन बताता है कि भारत की विश्वनीयता निसंदेह सर्वग्राह्य है। ग्लोबल साउथ के देश अब दुनियाँ में सबसे ज्यादा भरोसा भारत पर ही करते है। भारत यहाँ अपने सॉफ्ट पावॅर स्किल का उपयोग करके अवसर को भूनाने की क्षमता रखता है। सॉफ्ट पावॅर राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और वैश्विक रिश्तों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हर्ष गोयनका के अनुसार यह दिल और दिमाग को जीतने का वह तरीका है, जिसे हार्ड पावॅर से हासिल नही किया जा सकता।

जी 20 देशों के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करते हुए भारत ने ग्लोबल साउथ की आवाज बनने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। भारतीय प्रधानमंत्री ने भारत को ग्लोबल साउथ के नेता के रूप मे पेश किया। भारत के जी 20 के अध्यक्ष बनने और वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट के आयोजन से यह स्पष्ट हो गया कि भारत उन देशों को भी साथ लेकर चलेगा जो, इससे बाहर थे। जी 20 में अफ्रीकी संघ को शामिल करने की भारत की पहल को सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। इससे एक प्रभावशाली वैश्विक समूह में वैश्विक दक्षिण की भागीदारी बढ़गी। भारत एक ऐसा देश है जो विश्व को एक परिवार मानता है, जी 20 का आदर्श वाक्य भी यही है। किसी भी परिवार में हर सदस्य की आवाज मायने रखती है। भारत ने जी 20 शिखर सम्मेलन में वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को मजबूती के साथ में रखा। जिसमें अन्य बातों के साथ खाद्य, पोषण, ऊर्जा सुरक्षा, हरित ऊर्जा में परिवर्तन, जलवायु वित्त, डिजिटल और तकनीकी विभाजन, वैश्विक वित्तीय और शासन का लोकतांत्रिकरण शामिल था।

भारत ने ग्लोबल साउथ की आवाज बनने के बाद इसे नए ऋण के जाल में फंसने से बचाने हेतु प्रयास शुरू कर दिये है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के स्थाई प्रतिनिधि पी हरीश ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 79 वें सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि 'ऋण स्थिरता सुनिश्चित करने और ऋण जाल को रोकने, किफायती वित्त तक पहुंच मुहैया कराने और वैश्विक व्यापार एवं निवेश प्रवाह में असमानता को दूर करने के लिए अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार की खातिर ठोस वैश्विक प्रयास की आवश्यकता है। तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी ने ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। भारत इसके लिए 2.5 मिलियन डॉलर के विशिष्ट फंड की पहल करेगा। साथ ही कैपेसिटी बिल्डिंग और पॉलिसी में ट्रेनिंग मुहैया करवाने हेतु 1 मिलियन डॉलर का फंड देने की बात भी कही गई। ये पहल मानव केंद्रित और विकास की दिशा में मल्टीडाइमेंशनल होगी। जो डवलपमेंट फाइनेंस के नाम पर जरूरतमंद देशों को कर्ज के तले नही दबाएगी। इस ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट के तहत ट्रेड फॉर डेवलपमेंट, कैपेसिटी बिल्डिंग फॉर सस्टेनेबल ग्रोथ, टेक्नोलॉजी शेयरिंग, व्यापार से जुड़ी गतिविधियों पर जोर दिया जायेगा।

भारत वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने के लिए इस कारण भी सर्व स्वीकार्य है क्योंकि भारत वैश्विक दक्षिण के अन्य देशों के विकास संघर्ष को समझता है। यह साझा अनुभव गरीबी, भूख, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए सहानुभूति और सहयोगात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। साथ ही भारत का गुटनिरपेक्षता का इतिहास इसे ध्रुवीकृत विश्व व्यवस्था में तटस्थ आवाज के रूप में स्थापित करता है। यह भारत को महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को पाटने और आम सहमति बनाने में सक्षम बनाता है। भारत की आर्थिक वृद्धि और एक प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र के रूप में उभरने से वैश्विक मंच पर उसे एक मजबूत आवाज मिलती है। इससे भारत को निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं की वकालत करने, अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक मंचों पर विकासशील देशों की चिंताओं को संबोधित करने और दक्षिण- दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने का अवसर मिलता है, जहाँ विकासशील देश आपसी लाभ के लिए सहयोग करते है।

बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) मार्क सुजैमैन ने कहा कि ''ग्लोबल साउथ की समस्याओं को रेखांकित करने के लिए भारत विशिष्ट रूप से विश्वसनीय आवाज है और उसकी जी 20 की अध्यक्षता से विकासशील देशों में स्वास्थ्य सेवा निर्माण व डिजिटल जन अवसंरचना को बढ़ाने मुद्दा केन्द्र में आयेगा।[11]

ग्लोबल साउथ नेतृत्व में भारत चीन प्रतिस्पर्धा

ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने के लिए भारत व चीन में प्रतिस्पर्धा जगजाहिर है। चीन ने विकासशील देशों में भारी निवेश करके और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से बुनियादी ढ़ांचे का निर्माण करके स्वयं को अमेरिका के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है, तो भारत ने खुद को एक मध्यस्थ के रूप में स्थापित करके प्रभाव हासिल करने की कोशिश की हैं।.....हालाँकि, वैश्विक ऋण के प्रति चीन के दृष्टिकोण और अतंरराष्ट्रीय संगठनों में भारत की बाधा जैसे मुद्दे पर बढ़ते टकराव ने दोनों देशों के प्रति अविश्वास और नापसंदगी पैदा करने मे योगदान दिया है। किन्तु भारत ने यहाँ बड़ी बढ़त हासिल कर ली है। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत-जापान साझोदारी पर 'निक्की फोरम' को संबोधित करते कहा कि ग्लोबल साउथ के देशों को भारत में यकिन है। ड्रैगन को ग्लोबल साउथ के देशों की चिन्ताओं से कोई मतलब नही है। ''पिछले साल उनकी (ग्लोबल साउथ) चिन्ताओं को सुनने के लिए हमने जो दो शिखर सम्मेलन आयोजित किए, मुझे नही लगता कि चीन उसमे उपस्थित हुआ था। यह माना जाता है कि भारत ने समझदारी से खुद को ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में पेश करने से परहेज किया है और इसके बजाय अधिक स्वीकार्य वाक्यांश 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ' को चुना है।[12] यह भी कहा जाता है कि ग्लोबल डवलपमेंट कॉम्पैक्ट को भारत ने चीन का मुकाबला करने के लिए एक मॉडल के रूप में तैयार किया है, जो उन देशों को ऋण के जाल में फंसने से बचायेगा जो ब्रीक्स के तहत या अन्यथा चीन की विकास सहायता प्राप्त करते है और चीन के ऋण जाल में फंस जाते है। वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ सम्मेलन के आयोजन ने जहाँ वैश्विक कूटनीतिक मंच पर भारत के प्रभाव में वृद्धि की है वहीं वैश्विक दक्षिण देशों के बीच चीन के प्रभुत्व में भी कमी की है। जबकी भारत इन देशों में अपने नए सहयोगी तैयार कर रहा है।[13]

ग्लोबल साउथ के प्रति भारतीय दृष्टिकोण और चीनी दृष्टिकोण के बीच स्पष्ट अन्तर इस बात से देखा जा सकता है कि वे पश्चिमी दुनियाँ के बारे में कैसे बात करते है। नई दिल्ली राष्ट्रों को बदला लेने की प्रेरणा के रूप मे उनके अतीत की याद नहीं दिलाती है बल्कि पश्चिम के साथ अधिक समान शर्तों पर सहयोग को प्रोत्साहित करती है। बीजिंग पश्चिम के विरोध में जानबूझकर तंत्र और समूह की मांग करता है।[14] भारत ने जिस प्रकार ग्लोबल साउथ देशों को

पिछले कुछ सालों में नेतृत्व किया है.....उससे वैश्विक मंच पर भारत की धाक बढ़ी है। यह भविष्य में संयुक्त राष्ट्र में सुधारों खासकर सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी के हिसाब से भी महत्वपूर्ण है। ये देश भारत का समर्थन कर सकते है, क्योंकि इनका संख्या काफी है। इसके अलावा, भारत छोटे देशों के साथ कारोबारी संबंधों को भी बढ़ा रहा है। जिस प्रकार से आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसके मद्देनजर आने वाले समय में दवा तथा तकनीकी क्षेत्र में उत्पादन बढ़ेगा और ये देश भारत के लिए निर्यात केंद्र बन सकते है।

''भारत के पास एक प्रतिष्ठा है, उसका एक रूख है, भारत के पास आत्मविश्वास है।''

REFERENCES

1. https://commonslibrary.parliament.uk/what-is-the-global-south/
2. www.aspistrategist.org.au/what-in-the-world-is-the-global-south/
3. theconversation.com/the-global-south-is-on-the-rise-but-what-exactly-is-the-global-south-207959
4. https://commonslibrary.parliament.uk/what-is-the-global-south/
5. unctad.org/news/south-south-cooperation-offers-solutions-solidarity-global-challenges
6. ब्रूनर, कार्ल (1982) ''आर्थिक विकास, कैनकन और पश्चिमी लोकतंत्र'' विश्व अर्थव्यवस्था.1: 64.
7. unctad.org/news/south-south-cooperation-offers-solutions-solidarity-global-challenges
8. https://commonslibrary.parliament.uk/what-is-the-global-south/
9. www.prabhasakshi.com/mri/what-is-global-south-whose-leader-is-india
10. m.punjabkesari.in/national/news/india-can-unite-global-south-with-developed-world-1925620#google_vignette
11. hindi.theprint.in/india/india-a-uniquely-credible-voice-to-highlight-the-problems-of-the-global-south/503437/
12. www.etvbharat.com/hi/!opinion/india-as-the-voice-of-the-global-south-hin24082603871
13. www.livehindustan.com/national/story-china-dominance-weakened-in-global-south-india-influence-increased-8984647.html
14. m.punjabkesari.in/national/news/india-can-unite-global-south-with-developed-world-1925620